Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

Vol: 23
Issue: 03

Monthly ANSARULLAH Qadian

2023
March

MAJLIS ANSARULLAH BHARAT

# मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

Date of Publication: 10-03-2025

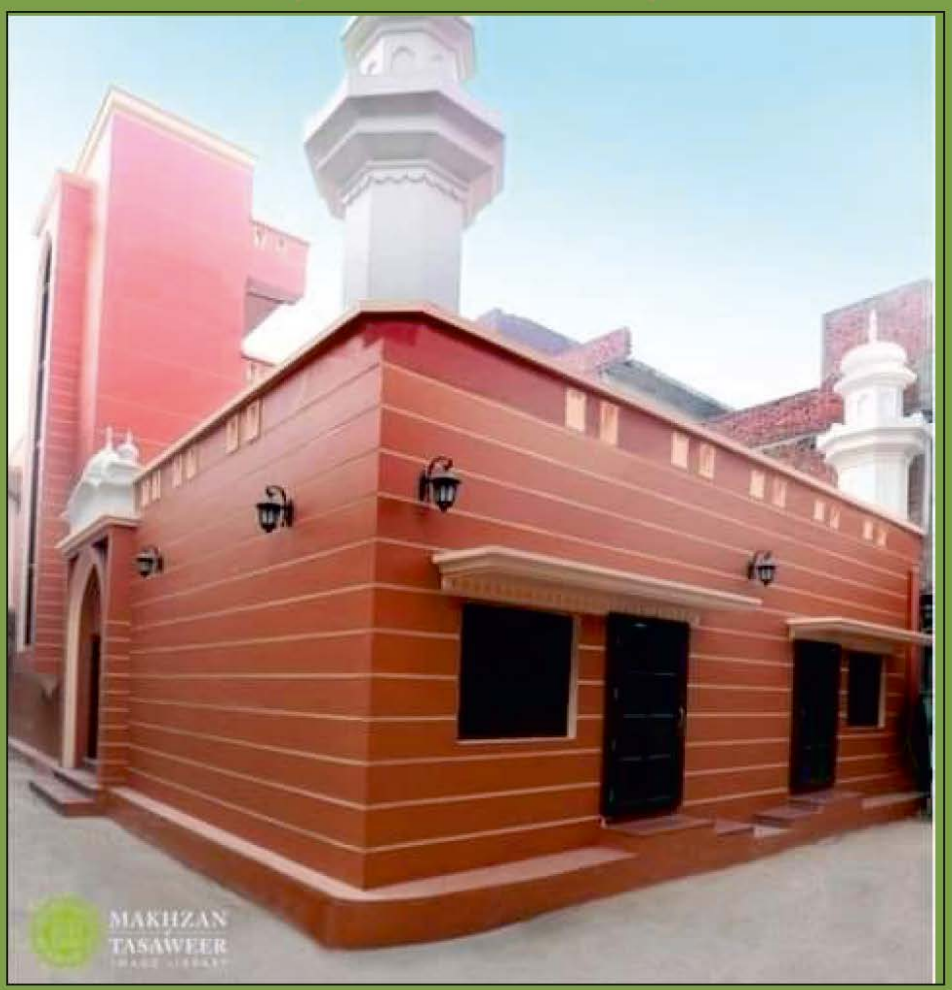


Hazrat Sufi Ahmad Jan's home in Ludhiana, where the first bai'at took place in 1889

www.ansarullahbharat.in | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz | Honery Editor: H.Shamsuddeen

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुखपत्रिका

मासिक

# अन्सारुल्लाह

क़ादियान

| मार्च 2025<br>अमान 1404 हि.श. | प्रबंधक<br>अताउल मुजीब लोन | संस्करण–22<br>अंक -03 |
|---|---|---|

**सम्पादक :** सय्यद रसूल नियाज | **एजाज़ी सम्पादक :** एच्.शम्सुद्दीन

**स.सम्पादक(हिन्दी) :** वसीम अहमद अज़ीम

**संपादन मंडल**

सय्यद कलीम अहमद अजबशेर

मोहम्मद इब्राहीम सरवर

**मैनेजर**

ताहिर अहमद बेग

99152 23313

**प्रेस**

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस

क़ादियान

वार्षिक मूल्य :₹ 250

विदेश: $ 50

**प्रकाशन स्थान**

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान 143516

जिला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 7837985190

Email:

ansarullah@qadian.in

WEB LINK

https://www.ansarullahbharat.in/Publications/

| विषय सुचि | पृष्ठ |
|---|---|
| सम्पादकीय | 2 |
| यौमे मसीह मौऊद | 2 |
| إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ | 3 |
| "इस्लाम के इतिहास की सबसे महान घटना" | 6 |
| महदी मौऊद भी रमज़ान के हुक्म में है | 8 |
| हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात | 10 |

## संपादकीय

# "हर इक राह नेकी की इख़तियार करो न मालूम किस राह से तुम क़बूल किए जाओ"

### यौम-ए-मसीह मौऊद

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:
"आज 23 मार्च है। जैसा कि हम जानते हैं कि आज का दिन जमात-ए-अहमदिया के इतिहास में बड़ा महत्त्व रखता है क्योंकि... हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के आदेश से बैअत की शुरुआत की थी और इस तरह जमात की स्थापना हुई थी। यह दिन इस्लाम के पुनरुत्थान के लिए मील के पत्थर की हैसियत रखता है।"
(खुतबा जुमा, 3 मार्च 2007)

रमज़ान के महीने का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक गहरा संबंध है। इसी मुबारक महीने में आपकी सच्चाई का एक महान निशान ज़ाहिर हुआ, जब सूरज और चाँद को ग्रहण लगा, जिसकी पेशगोई न केवल क़ुरआन करीम और पिछले धर्मों की किताबों में मौजूद थी, बल्कि हदीस-ए-नबवी में भी स्पष्ट रूप से बयान की गई थी। रमज़ान में लैलतुल क़द्र की खुशख़बरी दी गई है, और हज़रत मसीह मौऊद ने अपनी बैअत में आने वालों के बारे में फ़रमाया कि उन्हें भी एक लैलतुल क़द्र नसीब होती है, जिससे एक हज़ार महीनों यानी 80 सालों के बराबर या यूँ कह सकते हैं कि एक इंसानी ज़िंदगी की पूर्णता और उसकी रूहानी तरक़्क़ी का कारण बनती है। 23 मार्च 1889 को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के आदेश से बैअत का सिलसिला शुरू फ़रमाया और आख़रीन की इस अज़ीमुश्शान जमात की बुनियाद रखी, जिसके बारे में रसूल-ए-अकरम ने फ़रमाया: " وهی الجماعة " (यानी वही एक जमात होगी)। और यह भी फ़रमाया: " ماأناعليه وأصحابی " (यानी वह जमात मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर चलेगी)। इस जमात के नाम के बारे में भी दीन के बुज़ुर्ग वलियों ने सदियों पहले उम्मत को आगाह फ़रमाया था, और यूँ यह जमात अपने क़ियाम के साथ ही अल्लाह तआला की ताइदात का एक जीता-जागता निशान बन गई। यह रमज़ानुल मुबारक और यौम-ए-मसीह मौउद एक बार फिर, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदेश के अनुसार हमें यह सन्देश दे रहे हैं कि:"हर एक राह नेकी की इख्तियार करो, न न मालूम किस राह से तुम क़बूल किए जाओ!" (अल-वसीयत / रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 20, सफ़ा 308)

**(एच. शमसुद्दीन)**

# दर्सुल क़ुरआन

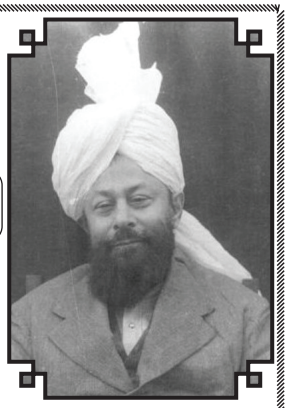

## हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि.

## रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बार-बार दुनिया में आने की भविष्यवाणी

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

**हमने यक़ीनन इस (क़ुरआन या मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक (अज़ीमुश्शान) क़द्र वाली रात में उतारा है।"**

हर व्यक्ति जानता है कि एक रात तो क्या, अगर कोई व्यक्ति एक घंटे में भी अपने इख़लास (निष्ठा) और मोहब्बत का ऐसा सबूत दे दे, जो किसी अन्य व्यक्ति की अस्सी साल की ज़िंदगी में भी न मिले, तो निश्चय ही उसका एक घंटा दूसरे की अस्सी साल की कोशिशों से बढ़कर होगा। बल्कि मैं कहता हूँ कि एक घंटे का भी सवाल नहीं, अगर किसी पर एक मिनट भी ऐसा आ जाए, तो उसका वह एक मिनट किसी अन्य व्यक्ति की अस्सी या सौ साल की इबादत से बढ़कर होगा।

उदाहरण के तौर पर देख लीजिए, हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर एक समय आया जब अस्सी साल की उम्र के बाद उनके यहाँ एक बेटा पैदा हुआ। फिर, जैसा कि बाइबिल और क़ुरआन करीम दोनों से साबित है, जब वह बड़ा हुआ, तो अल्लाह तआला ने उन्हें आदेश दिया कि अपने इस बेटे को अल्लाह की राह में क़ुर्बान कर दो।

(सूरह अस्साफ़्फ़ात : 103, बाइबिल - उत्पत्ति अध्याय 22, आयत 14-1)

एक और अर्थ इस आयत का यह है कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ और क़ुरआन करीम को लैलतुल क़द्र में उतारते रहते हैं। यानी, केवल क़ुरआन का पहला नुज़ूल (अवतरित होना) ही एक अंधकारमय युग में नहीं हुआ, बल्कि भविष्य में भी जब दुनिया में अंधकार का युग आएगा, तब भी क़ुरआन करीम और मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ फिर से दुनिया में अवतरित होंगे और मानव जाति का मार्गदर्शन करेंगे।

अर्थात ऐसा कोई समय नहीं आएगा जब दुनिया में विनाश हो और क़ुरआन और

मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ उसकी हिदायत का साधन न बन सकें। किसी नई शरीअत की आवश्यकता कभी पैदा नहीं होगी। बल्कि जब भी क़ुरआन का नूर (प्रकाश) दुनिया से मिटने लगेगा और मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की रौशनी पर पर्दा पड़ने लगेगा, तब अल्लाह तआला फिर से मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के मसील (प्रतिरूप) को दुनिया में भेजेगा, जो आपके नूर को फिर से प्रकट करेगा और क़ुरआन करीम की शिक्षाओं को फिर से प्रकाशित करेगा।

दूसरी जगह क़ुरआन में आता है:

هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡہُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتِہٖ وَیُزَکِّیۡہِمۡ وَیُعَلِّمُہُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَۃَ ٭
وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۙ وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ ؕ وَہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ

"वह वही है जिसने उम्मियों (अशिक्षित लोगों) में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन पर उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है, उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब और हिकमत की शिक्षा देता है, यद्यपि इससे पहले वे खुली गुमराही में थे। और (उसने उन्हें) उन दूसरे लोगों के लिए भी भेजा है जो अभी उनसे नहीं मिले, और वही प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील है।"

(सूरह अल-जुमआ : 4-3)

इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को उस समय भी भेजा जब आप साक्षात आए थे और भविष्य में भी उस समय भेजेगा जब वैसे ही हालात उत्पन्न होंगे। अर्थात, अल्लाह तआला आपके एक मसील (प्रतिरूप) को प्रकट करेगा, जो आपका उत्तराधिकारी बन कर फिर से दुनिया को इस्लाम की ओर लाएगा और इसकी शक्ति को स्थापित करेगा।

इसी युग के बारे में रसूलुल्लाह ने यह भी फ़रमाया है कि उस समय क़ुरआन भी आसमान पर उठा लिया जाएगा और वह मौ'ऊद (वादा किया गया व्यक्ति) क़ुरआन को फिर से वापस लाएगा।

आप फ़रमाते हैं:

"इस्लाम का केवल नाम ही बाक़ी रह जाएगा और क़ुरआन का केवल लिखित रूप ही शेष रह जाएगा।" (मिश्कातुल-मसाबीह, किताबुल-इल्म)

इस्लाम के नाम और क़ुरआन के केवल शब्दों के बच जाने के बावजूद, वह वादा

किया गया व्यक्ति फिर से क़ुरआन को इसकी पूर्ण शिक्षाओं और ज्ञान के साथ संसार में लाएगा। यही नहीं, बल्कि इसी सूरह में इस ओर संकेत भी मिलता है। आगे कहा गया:

"تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا"

यह इस्तिमरार (निरंतरता) का शब्द है, अर्थात, ऐसी लैलतुल क़द्र की रातें बार-बार आने वाली हैं, और उनमें अल्लाह के फ़रिश्ते और रूह उतरते रहेंगे। इसका परिणाम यह निकलता है कि आयत "اَنْزَلْنَا" का अर्थ केवल भूतकाल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भविष्य की ओर भी संकेत करता है। और क़ुरआन में कई स्थानों पर भूतकाल के शब्द भविष्य के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।

(स्रोत: तफ़सीर-ए-कबीर, खंड 13, लंदन एडिशन 2024)

★ ★ ★


**INDIAN AUTO**

**हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।**

**P. Ali Koya**

CALICUT (KERALA)

**"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"**

**MUSTAFA BOOK CO**

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

**KANNUR-1 (KERALA)**

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

**तालिबे दुआ :**

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

# दर्सुल हदीस

## كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ وَإِمَامُكُمْ مِنكُمْ

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए

### इस्लाम के इतिहास की सबसे महान घटना

كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ وَإِمَامُكُمْ مِنكُمْ

प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "यह कितनी मुबारक घड़ी होगी जब मसीह इब्न मरयम तुम्हारे बीच अवतरित होंगे और तुम्हीं में से तुम्हारे एक इमाम होंगे।"

क़मरुल अंबिया हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब(र.अ)

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولاً شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَى فِرْعَوْنَ رَسُولاً (अल-मुज़म्मिल: 16)

अर्थात्, "हे लोगों! हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है जो तुम पर अल्लाह की ओर से नज़ीर (साक्षी) है, जिस प्रकार हमने "फ़िरऔन की ओर एक रसूल भेजा था।

इसलिए आवश्यक था कि जिस प्रकार हज़रत मूसा(अ.स) के बाद उनके मिशन की पूर्णता के लिए एक मसीह का प्रतिरूप व्यक्ति भेजा गया, उसी प्रकार प्यारे नबी रसूलल्लाह ﷺ के बाद उनकी उम्मत में से, इस्लाम के वैश्विक प्रचार के लिए एक 'मसीह का प्रतिरूप' पैदा किया जाए, यह मसीहा हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद(अ.स) की सूरत में प्रकट हुए।

इसीलिए रसूलल्लाह ﷺ अपनी उम्मत को फरमाते हैं:

"وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَيُوشِكَنَّ أَن يَنزِلَ فِيكُمُ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا عَدْلًا فَيَكْسِرُ الصَّلِيبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيرَ وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ .... كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ وَإِمَامُكُمْ مِنكُمْ"

(बुख़ारी, किताबुल-अंबिया, बाब नुज़ूल ईसा बिन मरयम)

अर्थात्, "उस अस्तित्व की क़सम, जिसकी क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुममें ज़रूर-ज़रूर एक मसीह इब्न मरयम का अवतरण होगा। वह तुम्हारे तमाम धार्मिक मामलों में न्यायप्रिय शासक (हकम अदल) बनकर सटीक निर्णय करेगा। वह 'सलीबी फ़ितने' के ज़ोर के समय में आएगा और इस फ़ितने को चकनाचूर कर देगा तथा समस्त 'ख़िनज़ीर सिफ़त' लोगों को समाप्त कर देगा। लेकिन यह सब कुछ तलवार से नहीं, बल्कि तर्क और प्रमाण के माध्यम से होगा, क्योंकि उस समय धर्म के लिए युद्ध और

जज़िया की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। "यह कितनी मुबारक घड़ी होगी जब मसीह इब्न मरयम तुम्हारे बीच अवतरित होंगे और तुम्हीं में से तुम्हारे एक इमाम होंगे।"

फिर इस बात को स्पष्ट करने के लिए कि यह आने वाला 'मुस्लेह' प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रतिबिंब बनकर और उन्हीं से फ़ैज़ पाकर इस्लाह (सुधार) का कार्य करेगा और उसका मिशन दरअसल प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही मिशन समझा जाएगा,

क़ुरआन मजीद में कहा गया:

"هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ" (अस-सफ: 10)

अर्थात्, "वही अल्लाह है जिसने अपने रसूल को संपूर्ण मार्गदर्शन और सच्चे धर्म के साथ भेजा है ताकि वह इसे दुनिया के तमाम धर्मों पर ग़ालिब कर दे।"

कई प्रसिद्ध मुफ़स्सिरीन (क़ुरआनी व्याख्याताओं) ने इस आयत के संबंध में कहा है कि इसका पूर्ण प्रकट होना 'मसीह मौऊद' के युग से संबंधित है। जब विभिन्न धर्मों के बीच टकराव अपने चरम पर होगा, तब इस्लाम का झंडा अन्य सभी झंडों को मात देकर आकाश को छूने लगेगा, इंशाअल्लाह।

इस भविष्यवाणी की पूर्ति का पहला चरण यही है कि 'जमात-ए-अहमदिया' के प्रचारक पूरी दुनिया में इस्लाम का परचम बुलंद करने में दिन-रात लगे हुए हैं। उनके लिए यह 'रूहानी बारूद' हज़रत मसीह मौऊद (अ.स) ने अपनी अनुपम साहित्यिक कृतियों के माध्यम से तैयार किया है।

इसलिए, इसमें कोई संदेह नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद (अ.स) की 'मबअस' (आगमन) प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद **सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम** के बाद इस्लाम के इतिहास की एक अत्यंत महानतम घटना है। दुनिया इस समय इसकी क़द्र नहीं कर रही है और अल्लाह की परंपरा के अनुसार, इसे झुठलाने और इसका उपहास करने में व्यस्त है।

लेकिन वह समय आएगा, और अल्लाह के फ़ज़ल से जल्दी आएगा, जब दुनिया इसकी क़ीमत को समझेगी और तब हज़रत मसीह मौऊद (अ.स) का यह कथन पूरा होगा:

"امروز قوم من بشناسید مقام من
روزے بگریہ یاد کنند وقت خوشترم"

अर्थात्, "आज मेरी क़ौम मेरे मुक़ाम को नहीं पहचान रही है, लेकिन एक दिन रोते हुए मेरे स्वर्णिम युग को याद करेगी।"

(स्रोत: रोज़नामा अल-फ़ज़ल रबवा, 29 मार्च 1958)

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

# हज़रत अक्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

## महदी मौऊद भी रमज़ान के हुक्म में है

"मैं उस ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसी ने मुझे भेजा है और उसी ने मेरा नाम नबी रखा है और उसी ने मुझे मसीह मौऊद के नाम से पुकारा है।"
(ततिम्मा हक़ीक़तुल वह्यी)

इस स्थान पर इस हिकमत को बयान करना भी उपयुक्त होगा कि ख़ुदा तआला ने चाँद और सूरज के ग्रहण (ख़सुफ़- कसूफ़) को जो रमज़ान में हुआ, महदी मौऊद की निशानी क्यों ठहराया? इसका क्या रहस्य है? तो जानना चाहिए कि ख़ुदा तआला जानता था कि इस्लाम के उलेमा महदी को काफ़िर ठहराएंगे... रमज़ान में ग्रहण होना इस बात की तरफ़ इशारा था कि रमज़ान, कुरआन के नुज़ूल और बरकतों का महीना है, और महदी मौऊद भी रमज़ान के हुक्म में है क्योंकि उसका ज़माना भी रमज़ान की तरह कुरआनी मारिफ़त के नुज़ूल और बरकतों के प्रकटन का ज़माना है। इसलिए उसके समय में उलेमा का उससे मुँह फेरना, उसे काफ़िर क़रार देना, यह गोया रमज़ान में ग्रहण लगने जैसा है। अगर किसी को ऐसी ख़्वाब आए कि रमज़ान में ग्रहण हुआ, तो उसकी यही ताबीर होगी कि किसी मुबारक इंसान के ज़माने में उलेमा उसकी मुख़ालफ़त करेंगे और उसे बुरा-भला कहेंगे और उसकी तौहीन व तकफ़ीर करेंगे।
(ज़मीमा रिसाला "अंजामे आथम", रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 11, पृष्ठ 295)

"मैं वह दरख़्त हूँ जिसे मालिक हक़ीक़ी ने अपने हाथ से लगाया है। जो शख़्स मुझे काटना चाहता है, उसका नतीजा इसके सिवा कुछ नहीं होगा कि वह क़ारून, यहूदा इस्करियूती और अबू जहल के नसीब से कुछ हिस्सा लेना चाहता है... ख़ुदा के मामूरीन के आने के लिए भी एक मौसम होता है और फिर जाने के लिए भी एक मौसम। इसलिए यक़ीनन समझो कि मैं न बेमौसम आया हूँ और न बेमौसम जाऊँगा। ख़ुदा से मत लड़ो, यह तुम्हारा काम नहीं कि मुझे तबाह कर दो।" (अरबईन नंबर 3, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 17, पृष्ठ 400-401)

"वे ज़मीन व आसमान में होने वाली घटनाएँ, जो मसीह मौऊद के ज़ुहूर की निशानियाँ थीं, वे सब मेरे समय में प्रकट हो चुकी हैं। बहुत

समय हो चुका कि रमज़ान के महीने में ग्रहण हो चुका है।"(किताब-उल-बरीया, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 13, पृष्ठ 298-299, हाशिया)

## लैलतुल-क़द्र और समय के मुस्लेह की संगत का लाभ

सूरह "अल-क़द्र" में अल्लाह फ़रमाता है और मोमिनों को बशारत देता है कि उसका कलाम और उसका नबी लैलतुल-क़द्र में आसमान से उतारा गया है।

हर एक मुस्लेह और मुजद्दिद, जो ख़ुदा तआला की तरफ़ से आता है, वह लैल-तुल-क़द्र में ही उतरता है। तुम जानते हो कि लैलतुल-क़द्र क्या चीज़ है? लैलतुल-क़द्र उस अंधकार के ज़माने का नाम है, जिसका अँधेरा अपनी आख़िरी हद तक पहुँच जाता है। इसलिए यह समय स्वयं ही इस बात की मांग करता है कि एक नूर नाज़िल हो, जो इस अंधकार को दूर करे।

इस ज़माने को रूपक के तौर पर "लैल-तुल-क़द्र" कहा गया है। परन्तु हक़ीक़त में यह कोई रात नहीं है, बल्कि यह एक युग (ज़माना) है, जो अपने अंधकार के कारण अंधरी रात के समान है।

जब किसी नबी या उसके रुहानी उत्तरा-धिकारी के पश्चात हज़ार महीने, जो एक इंसान के जीवन और उसकी चेतना के अंत का सूचक है, व्यतीत हो जाते हैं। तो यह रात अपनी रंगत जमाने लगती है।

तब आसमानी कार्रवाई से एक या कई मुस्लेहों (सुधारकों) के आगमन की तैयारी शुरू हो जाती है, जो नई सदी के शुरू में प्रकट होने के लिए अंदर ही अंदर तैयार हो रहे होते हैं।

इसी की तरफ़ अल्लाह जल्ल शानहु इशारा फ़रमाता है:

"इस लैलतुल-क़द्र के नूर को देखने वाला और समय के सुधारक (मुस्लेह) की संगत पाने वाला, उस अस्सी (80) साल के बूढ़े से बेहतर है जिसने इस प्रकाशमयी युग को नहीं पाया।" और अगर किसी ने एक घड़ी भी इस समय को पा लिया, तो यह एक घड़ी उन हज़ार महीनों से बेहतर है जो पहले गुज़र चुके।

**क्यों बेहतर है?**

क्योंकि इस लैलतुल-क़द्र में अल्लाह तआला के फ़रिश्ते और रुहुल-क़ुद्स, उस मुस्लेह के साथ रब्बे जलील के हुक्म से आसमान से उतरते हैं। निरर्थक नहीं, बल्कि इसलिए कि वह सच्चे दिलों पर नाज़िल हों और सलामती की राहें खोलें।

(फतह इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 3, पृष्ठ 33)

**"मैं वही मसीह मौऊद हूँ जिसका आना आख़िरी ज़माने में ख़ुदा की तरफ़ से निर्धारित था। और मैं वही 'मुनअम अलैहि' हूँ, जिसकी तरफ़ सूरत फ़ातिहा में उन दो फ़िरक़ों के प्रकट होने के समय इशारा किया गया था, और जिस समय बिदअतें और फितने फैल जाएँगे। तो क्या तुम स्वीकार नहीं करोगे?"**

ख़ुत्बा इल्हामिया, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 16, पृष्ठ 179)

# हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात

अब हमें हर हाल में अल्लाह तआला के हुक्मों की पाबंदी करनी होगी।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम के इस आदेश से स्पष्ट होता है कि बैअत क्या होती है? यदि हममें से हर कोई यह समझ जाए कि अब मेरी ज़ात मेरी अपनी नहीं रही, अब हमें हर हाल में अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करना होगा और हमारा हर कार्य केवल अल्लाह की रज़ा के लिए होगा, तो यही दस शर्तों की बैअत का सारांश है।

**बैअत का आदेश और उसकी शुरुआत**

1888 की पहली तिमाही में अल्लाह तआला की ओर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्स-ला को बैअत लेने का आदेश प्राप्त हुआ। जो इन शब्दों में था: "जब तुम निश्चय कर लो, तो अल्लाह पर भरोसा करो और हमारे आदेश तथा वह्यी के अनुसार नाव बनाओ। जो लोग तुम्हारे हाथ पर बैअत करेंगे, वे वास्तव में अल्लाह से बैअत कर रहे होंगे। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर होगा।" (इश्तेहार 1 दिसंबर 1888, पृष्ठ 2)

**बैअत के लिए पात्र लोगों का चयन**

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रकृति इस बात को पसंद नहीं करती थी कि हर प्रकार के लोग (अच्छे और बुरे) बैअत के सिलसिले में शामिल हो जाएं। बल्कि दिल यही चाहता था कि इस मुबारक सिलसिले में वही मुबारक लोग शामिल हों, जिनकी प्रकृति में वफ़ादारी का गुण हो और वे सच्चे दिल से इस जमाअत में प्रवेश करें।

**पहली बैअत का ऐलान**

इसीलिए आप एक ऐसे अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो सच्चे और कपटी (मुनाफ़िक़) लोगों के बीच भेद स्पष्ट कर दे। अल्लाह तआला की अपार हिकमत और रहमत से वह अवसर नवंबर 1888 में आपके सुपुत्र बशीर अव्वल की मृत्यु के माध्यम से उत्पन्न हुआ। इस घटना के बाद देशभर में आपके विरुद्ध एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ और संदेह रखने वाले लोग अलग हो गए।

इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसे इस मुबारक सिलसिले की शुरुआत के लिए उचित समय समझा और 1 दिसंबर 1888 को एक इश्तेहार जारी करके बैअत का ऐलान किया।

**बैअत से पहले इसतेख़ारा करने की हिदायत**

आपने यह भी हिदायत दी कि "बैअत से पहले इसतेख़ारा करें, दुआ करें, फिर बैअत के लिए आएं।"(इश्तेहार तकमील-ए-तबलीग़, 12 जनवरी 1889)

7.1.2025 को आयोजित मिसाली वक़ारे अमल मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला कालीकट, वायनाड (केरला) ।

23.1.2025 को मज्लिस अंसारुल्लाह कलकत्ता की तरफ़ से लिटरेचर भेंट करते हुए ।

7.1.2025 को मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला कालीकट, वायनाड (केरला) की तरफ़ से विश्व शांति के play cards का प्रदर्शन ।

फ़रवरी 2025 में आयोजित रिफ्रेशर क्लास मज्लिस अंसारुल्लाह ओडिशा ।